0750CH20

विप्लव-गायन 20

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ–
जिससे उथल पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर से आए।

सावधान! मेरी वीणा में
चिनगारियाँ आन बैठी हैं,
टूटी हैं मिज़राबें, अंगुलियाँ
दोनों मेरी ऐंठी हैं।
कंठ रुका है महानाश का
मारक गीत रुद्ध होता है,
आग लगेगी क्षण में, हृत्तल में
अब क्षुब्ध-युद्ध होता है।
झाड़ और झंखाड़ दग्ध है
इस ज्वलंत गायन के स्वर से,
रुद्ध-गीत की क्रुद्ध तान है
निकली मेरे अंतरतर से।
कण-कण में है व्याप्त वही स्वर
रोम-रोम गाता है वह ध्वनि,
वही तान गाती रहती है,
कालकूट फणि की चिंतामणि।

© NCERT not to be republished

आज देख आया हूँ–जीवन के
सब राज़ समझ आया हूँ,
भ्रू–विलास में महानाश के
पोषक सूत्र परख आया हूँ।

❑ *बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'*

कविता के बारे में

'विप्लव गायन' जड़ता के विरुद्ध विकास एवं गतिशीलता की कविता है। विकास और गतिशीलता को अवरुद्ध करनेवाली प्रवृत्ति से संघर्ष करके कवि नया सृजन करना चाहता है। इसलिए कवि विप्लव के माध्यम से परिवर्तन की हिलोर लाना चाहता है।

© NCERT not to be republished

प्रश्न–अभ्यास

कविता से

1. 'कण–कण में है व्याप्त वही स्वर······कालकूट फणि की चिंतामणि'
   (क) 'वही स्वर', 'वह ध्वनि' एवं 'वही तान' आदि वाक्यांश किसके लिए/किस भाव के लिए प्रयुक्त हुए हैं?
   (ख) वही स्वर, वह ध्वनि एवं वही तान से संबंधित भाव का 'रुद्ध–गीत की क्रुद्ध तान है/निकली मेरी अंतरतर से'–पंक्तियों से क्या कोई संबंध बनता है?
2. नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–
   'सावधान! मेरी वीणा में······दोनों मेरी ऐंठी हैं।'

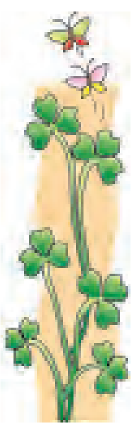

कविता से आगे

■ स्वाधीनता संग्राम के दिनों में अनेक कवियों ने स्वाधीनता को मुखर करनेवाली ओजपूर्ण कविताएँ लिखीं। माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त और

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की ऐसी कविताओं की चार–चार पंक्तियाँ इकट्ठा कीजिए जिनमें स्वाधीनता के भाव ओज से मुखर हुए हैं।

अनुमान और कल्पना

- कविता के मूलभाव को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसका शीर्षक 'विप्लव–गायन' क्यों रखा गया होगा?

भाषा की बात

1. कविता में दो शब्दों के मध्य (–) का प्रयोग किया गया है, जैसे–'जिससे उथल–पुथल मच जाए' एवं 'कण–कण में है व्याप्त वही स्वर'। इन पंक्तियों को पढ़िए और अनुमान लगाइए कि कवि ऐसा प्रयोग क्यों करते हैं?
2. कविता में (,–। आदि) विराम चिह्नों का उपयोग रुकने, आगे–बढ़ने अथवा किसी खास भाव को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। कविता पढ़ने में इन विराम चिह्नों का प्रभावी प्रयोग करते हुए काव्य पाठ कीजिए। गद्य में आमतौर पर **है** शब्द का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है, जैसे–देशराज जाता है। अब कविता की निम्न पंक्तियों को देखिए–

   'कण–कण में है व्याप्त······वही तान गाती रहती है,'

   इन पंक्तियों में **है** शब्द का प्रयोग अलग–अलग जगहों पर किया गया है। कविता में अगर आपको ऐसे अन्य प्रयोग मिलें तो उन्हें छाँटकर लिखिए।
3. निम्न पंक्तियों को ध्यान से देखिए–

   'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ······एक हिलोर उधर से आए,'

   इन पंक्तियों के अंत में **आए, जाए** जैसे तुक मिलानेवाले शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसे तुकबंदी या अंत्यानुप्रास कहते हैं। कविता से तुकबंदी के अन्य शब्दों को छाँटकर लिखिए। छाँटे गए शब्दों से अपनी कविता बनाने की कोशिश कीजिए।

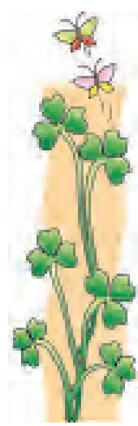

© NCERT not to be republished

शब्दकोश

यहाँ आपके लिए एक छोटा सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और आपके लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ होते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर आप यह अनुमान खुद लगा सकते हैं कि कौन सा अर्थ ठीक है।

तुम देखोगे कि शब्द के अर्थ से पहले विभिन्न प्रकार के अक्षर-संकेत दिए गए हैं। इन संकेतों से हमें शब्दों की व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। नीचे दी गई सूची की मदद से आप इन अक्षर-संकेतों को समझ सकते हैं–

अ.	–	अव्यय	अ.क्रि.	–	अकर्मक क्रिया
क्रि.	–	क्रिया	स.क्रि.	–	सकर्मक क्रिया
सं.	–	संज्ञा	वि.	–	विशेषण
पु.	–	पुल्लिंग	फ़ा	–	फ़ारसी
स्त्री.	–	स्त्रीलिंग			

अतिशय-(वि.)बहुत

अधित्यकाएँ-(स्त्री.)पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि, 'टेबललैंड'

अप्रतिभ-(वि.)अन्यमनस्क, उदास, निराश, हतप्रभ

आकृष्ट-(वि.)आकर्षित

आजानुलंबित केश-(वि.)घुटनों तक लंबे बाल

आर्तक्रंदन-(पु.)दर्द भरी आवाज़ में रोना

आवन-(स.क्रि.)आना

आविर्भूत-वि.(सं.)प्रकट, उत्पन्न

इंद्रनील-(पु.)नीलकांत मणि, नीलम, नीलमणि, इंद्र का प्रिय रत्न

इल्ली-(स्त्री.)तितली के बच्चों का अंडे से निकलने वाला बाद का रूप

उचारै-(स.क्रि.)उच्चारण करना

उन्मुक्त-वि.(सं.)बंधन रहित, स्वतंत्र

उपत्यकाएँ-(स्त्री.)पहाड़ के पास की भूमि, तराई, घाटी

उमग्यो-(क्रि.)उमड़ना

उरिन-(वि.) ऋण मुक्त, उऋण

© NCERT not to be republished

कटुक-वि(.सं.)कड़वी, कटु
कर्कश-(वि.)कठोर, उग्र
कर्णवेध-(वि.) कान छेदने का संस्कार या रस्म
कार्तिकेय-(सं.)कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न शिव के पुत्र, देवताओं के सेनापति
कुब्जा-वि.स्त्री.(सं.)कुबड़ी, कंस की एक कुबड़ी दासी जिसकी टेढ़ी पीठ कृष्ण ने सीधी की थी
केका-स्त्री.(सं.) मोर की बोली
क्रूर-वि.(सं.)-निर्दय, हिंसक, कठोर
क्वार-(वि.)महीने का नाम-आश्विन
क्षीण-(वि.)दुर्बल, पतला
गरूर-पु.(अ.)गर्व, घमंड
घाम-(पु.)धूप
घेऊर-(स्त्री.)ताल में उपजनेवाली घासें
चंचु-प्रहार-चोंच से चोट करना
चिकोटी-(स्त्री.)चुटकी
छंद-(पु.)वर्ण, मात्रा, यति आदि के नियमों से युक्त वाक्य, अभिलाषा, इच्छा,अभिप्राय
डोंगर-(पु.)टीला, पहाड़ी
तजि-(स.क्रि.)तजना, छोड़ना
तरबतर-(वि.)लथपथ, डूबे हुए
तुषार-(सं.)बरफ़ 'हिम' का टुकड़ा
थामना-(स.क्रि.)पकड़ना
दस्तूर-(फ़ा.)तरीका, रीति
दामिन-(स्त्री.) दामिनी, बिजली
दुकेली-(वि.)जो अकेली न हो, जिसके साथ कोई और हो
द्युति-स्त्री.(सं.)चमक
द्विशाखा-(वि.)दो शाखाएँ
धकियाना-(स.क्रि.) धक्का देना
नवागंतुक-(वि.)नया-नया आया हुआ, नया अतिथि
निकसार-(पु.)निकास, निकलने का द्वार या मार्ग
निश्चेष्ट-(सं.)बिना प्रयास के, चेष्टा रहित, अचेत
निषेध-(अ.क्रि.)नकारना, मना करना
पक्षी-शावक-पु.(सं.)चिड़िया का बच्चा
परकाज-(वि.)उपकार, दूसरे का काम
पिंजरबद्ध-वि.(सं.)पिंजरे में बंद
पुनरुद्धार-(अ.क्रि)फिर से ऊपर उठाना, दोबारा उद्धार करना
प्रतिदान-(पु.)बदले में
फोकट-(वि.) मूल्यरहित, मुफ़्त
बंकिम-(वि.)बाँका, टेढ़ा
बंधुर-पु.(सं.)मुकुट
बदरिया-(स्त्री.)बादल
बदहवास-(वि.)घबराया हुआ
बलिहारी-(स्त्री.)निछावर होना
बारहा-अ.(फ़ा)बार-बार, अनेक बार
भद्द-(स्त्री.)उपहास, बुरी दशा
भाव-भंगी-(वि.)हाव-भाव
मंद्र-वि. (सं.)सुस्त, गंभीर, धीमा
मार्जारी-(स्त्री.)मादा बिल्ली
मुदित-(वि.)प्रसन्न
मूजी-वि.(अ.)कंजूस
मृदुल-(पु.)कोमल
मेह-(पु.)मेघ, बादल

मोथा, साई
बनप्याज
नागर मोथा } (पु.) खेतों में उपजनेवाली घासों के नाम

विज्ञापित-(वि.)विज्ञापन में दिखाया गया

विनिहित-(वि.)रखा हुआ

विशूचिका-(स्त्री.)संक्रामक रोग, हैज़ा, चेचक

विस्मय-(वि.)आश्चर्य

व्यसन-पु.(सं.)बुरी आदत

शरद-(वि.)वर्षा के बाद और शिशिर ऋतु के पहले की ऋतु

संकीर्ण-वि.(सं.)सँकरा, छोटा, संकुचित

संगमरमर-(पु.) मुख्य रूप से मकराना, राजस्थान में पाए जाने वाला एक सफ़ेद सुंदर पत्थर जो इमारतों में लगाया जाता है।

संभ्रांत-(वि.)कुलीन, अच्छे कुल का

संशय-(वि.)आशंका, संदेह

सचहिं-(स.क्रि.)संचय, जमा करना

सबद-(पु.)शब्द

सरवर-(पु.)नदी

सरसब्ज़-(वि.)हराभरा

सरसाम-(पु.)सिहरन और कँपकपी के साथ बच्चों को होनेवाला बुखार

साफ़ा-(पु.)एक तरह की पगड़ी जो कुछ अधिक ऊँची होती है

साहबी ठिकानों-(वि.)समृद्ध/अमीर लोगों के घर

सीत-(स्त्री.)ओस के कण, शरद ऋतु

सुजान-(पु.)बुद्धिमान

सुणा-(स.क्रि.)सुनना

सुरम्य-वि.(सं.)मनोहर, अति रमणीय, सुंदर स्थान

सुहावन-(वि.)सुंदर

सूमो-(पु.)जापानी पहलवान

स्तबक-पु.(सं.)फूलों का गुच्छा

स्थिर-(वि.) गति रहित, अचल

स्नेहसिक्त-(वि.)प्रेम से भरा हुआ, स्नेह से भीगा हुआ

स्मृति-(स.क्रि.)याद

स्वपन-(पु.)स्वप्न, सपना

हर्ष गद्‌गद-पु.(सं.)प्रसन्नता से भरा हुआ

होड़ा-होड़ी-(स्त्री.)प्रतिस्पर्धा, दूसरे से आगे बढ़ जाने की चाह

© NCERT not to be republished